SANSKRIT DEPARTMENT

TEXT- NITISHATAKAM

SEM-01

P.K.CHAUDHARI MAHILA ARTS COLLEGE,GANDHINAGAR

Sanskrit

SEM-01

COMPULSORY SANSKRIT

Bhartrihari Virachitam Nitishatakam

Selected Verses

NITISHATAKAM

प्रहस्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्
समुद्रमपि सन्तरेत्प्रचलदूर्मिमालाकुलम् ।
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेन्न तु
प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥

- अगर हम चाहें तो मगरमच्छ के दांतों में फसे मोती को भी निकाल सकते हैं, साहस के बल पर हम बड़ी-बड़ी लहरों वाले समुद्र को भी पार कर सकते हैं, यहाँ तक कि हम गुस्सैल सर्प को भी फूलों की माला तरह अपने गले में पहन सकते हैं; लेकिन एक मुर्ख को सही बात समझाना असम्भव है।

NITISHATAKAM

Cycle of Personality Development

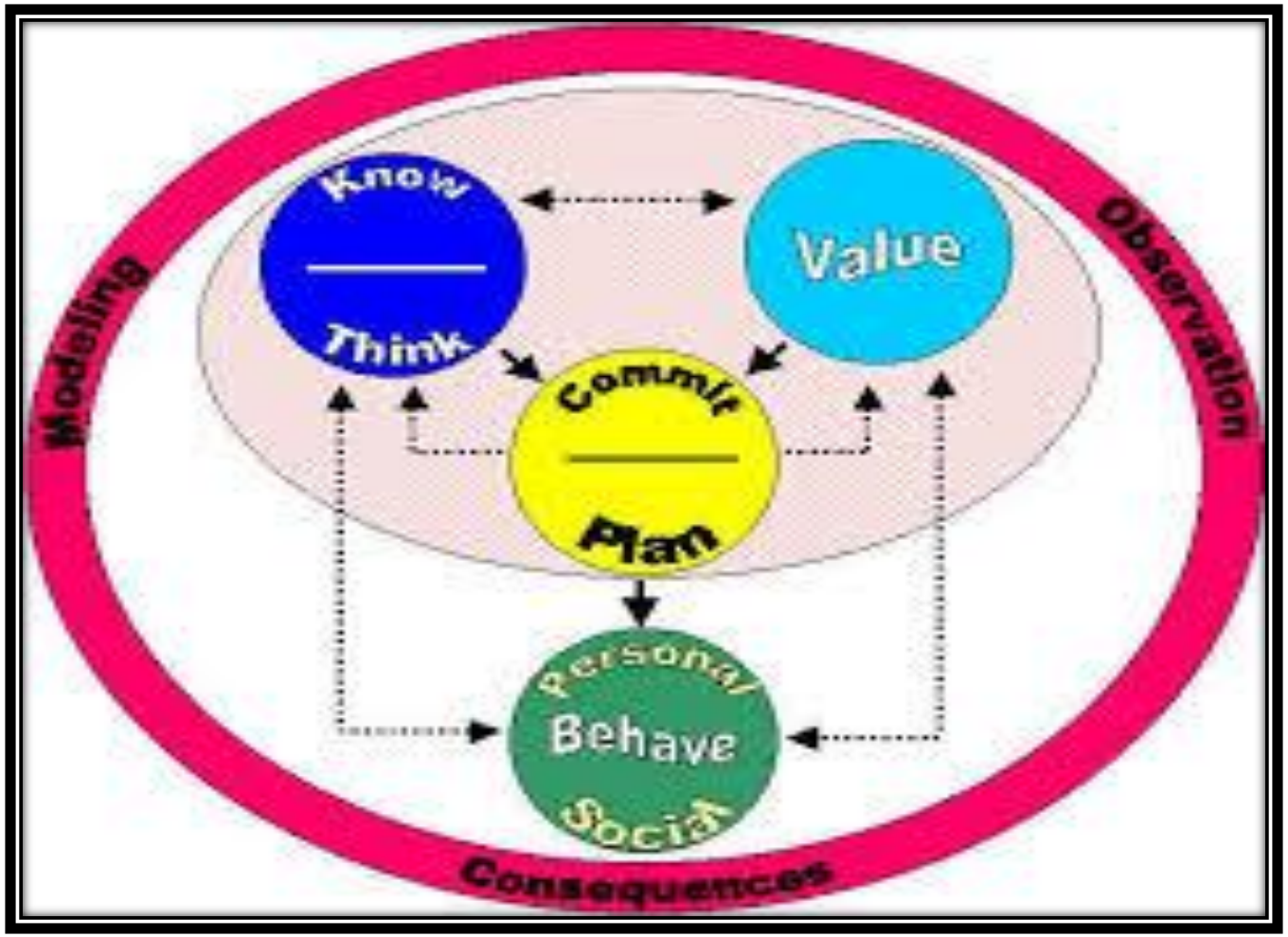

NITISHATAKAM

- लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयत्
  पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः ।
  कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्
  न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥
- अथक प्रयास करने पर रेत से भी तेल निकला जा सकता है तथा मृग मरीचिका से भी जल ग्रहण किया जा सकता हैं। यहाँ तक की हम सींघ वाले खरगोशों को भी दुनिया में विचरण करते देख सकते है; लेकिन एक पूर्वाग्रही मुर्ख को सही बात का बोध कराना असंभव है।

NITISHATAKAM

- **यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं**
- **तदा सर्वज्ञोऽसमीत्यभवदवलिप्तं मम मनः ।**
- **यदा किंचित्किंचिदबुधजनसकाशादवगत**
- **तदा मूर्खोस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः ॥[8]**
- जब मैं बिल्कुल ही अज्ञानी था तब मैं मदमस्त हाथी की तरह अभिमान मे अंधे होकर अपने आप को सर्वज्ञानी समझता था। लेकिन विद्वानो की संगति से जैसे-जैसे मुझे ज्ञान प्रप्त होने लगा मुझे समझ मे आ गया की मैं अज्ञानी हूँ और मेरा अहंकार जो मुझपर बुखार की तरह चढ़ा हुआ था उतर गया।

NITISHATAKAM

- साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
- तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥
- साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात नाख़ून और सींघ रहित पशु के समान है। और ये पशुओं की खुद्किस्मती है की वो उनकी तरह घास नहीं खाता।

NITISHATAKAM

- येषां न विद्या न तपो न दानं
- ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
- ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता
- मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥[13]
- जिन लोगों ने न तो विद्या-अर्जन किया है, न ही तपस्या में लीन रहे हैं, ने ही दान के कार्यों में लगे हैं न ही ज्ञान अर्जित किया है, न ही अच्छा आचरण करते हैं, न ही गुणों को अर्जित किया है और न ही धार्मिक अनुष्ठान किये हैं, वैसे लोग इस मृत्युलोक में मनुष्य के रूप में मृगों की तरह भटकते रहते हैं और ऐसे लोग इस धरती पर भार की तरह।

STORY OF MORALITY

NITISHATAKAM

- **शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् छत्रेण सूर्यातपो नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदौ दण्डेन गोगर्धभौ ।**
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ॥[11]
- अग्नि को जल से बुझाया जा सकता है, तीव्र धुप में छाते द्वारा बचा जा सकता है, जंगली हाथी को भी एक लम्बे डंडे(जिसमे हुक लगा होता है) की मदद से नियंत्रित किया जा सकता है, गायों और गधों से झुंडों को भी छड़ी से नियंत्रित किया सकता है। अगर कोई असाध्य बीमारी हो तो उसे भी औषधियों से ठीक किया जा सकता है। यहाँ तक की जहर दिए गए व्यक्ति को भी मन्त्रों और औषधियों की मदद से ठीक किया जा सकता है। इस दुनिया में हर बीमारी का इलाज है लेकिन किसी भी शा१त्र या विज्ञान में मूर्खता का कोई इलाज या उपाय नहीं है।

NITISHATAKAM

- हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा
- ह्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम् ।
- कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धन
- येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते ॥[16]
- ज्ञान अद्भुत धन है, ये आपको एक ऐसी अद्भुत ख़ुशी देती है जो कभी समाप्त नहीं होती। जब कोई आपसे ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा लेकर आता है और आप उसकी मदद करते हैं तो आपका ज्ञान कई गुना बढ़ जाता है।शत्रु और आपको लूटने वाले भी इसे छीन नहीं पाएंगे यहाँ तक की ये इस दुनिया के समाप्त हो जाने पर भी ख़त्म नहीं होगी।

  अतः हे राजन! यदि आप किसी ऐसे ज्ञान के धनी व्यक्ति को देखते हैं तो अपना अहंकार त्याग दीजिये और समर्पित हो जाइए, क्यूंकि ऐसे विद्वानो से प्रतिस्पर्धा करने का कोई अर्थ नहीं है।

NITISHATAKAM

- **अधिगतपरमार्थान्पण्डितान्मावमंस्था**
  स्तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि ।
- **अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलानां**
  न भवति बिसतन्तुवरिणं वारणानाम् ॥[17]
- किसी भी ज्ञानी व्यक्ति को कभी काम नहीं आंकना चाहिए और न ही उनका अपमान करना चाहिए क्यूंकि भौतिक सांसारिक धन सम्पदा उनके लिए तुक्ष्य घास से समान है। जिस तरह एक मदमस्त हाथी को कमल की पंखुड़ियों से नियंत्रित नहीं किया जा सकता ठीक उसी प्रकार धन दौलत से ज्ञानियों को वश में करना असंभव है !

NITISHATAKAM

- विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
- विद्या भोगकारी यशःसुखकारी विद्या गुरूणां गुरुः ।
- विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
- विद्या राजसु पूजिता न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥
- वास्तव में केवल ज्ञान ही मनुष्य को सुशोभित करता है, यह ऐसा अद्भुत खजाना है जो हमेशा सुरक्षित और छिपा रहता है, इसी के माध्यम से हमें गौरव और सुख मिलता है। ज्ञान ही सभी शिक्षकों को शिक्षक है। विदेशों में विद्या हमारे बंधुओं और मित्रो की भूमिका निभाती है। ज्ञान ही सर्वोच्च सत्ता है। राजा - महाराजा भी ज्ञान को ही पूजते व सम्मानित करते हैं न की धन को। विद्या और ज्ञान के बिना मनुष्य केवल एक पशु के समान है।